सरल व सुलभ बनाकर उसके आत्मचिन्तन की शक्ति में वृद्धि करके विभिन्न प्रकार की बीमारियों से लड़ने की क्षमता प्रदान करते हुये स्वस्थ जीवन निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जहां हम एक ओर महिलाओं के सशक्तिकरण की बात करते है तो यह प्रश्न उठता है कि महिलाओं के लिए यह बात कहां तक सत्य है। आज की वर्तमान स्थिति को देखते हुये हम महिलाओं के उत्थान और आत्मनिर्भरता के लिए संगीत विषय को अनिवार्य विषय बनाकर उसके माध्यम से अच्छा परिणाम प्राप्त कर सकते है। संगीत के द्वारा महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक व मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान कर सकते है। जिससे महिलाओं के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री अस्मिता का स्वरूप

डॉ॰ अर्चना सिंह
एसो. प्रो., हिन्दी विभाग
कु॰ मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर (उ॰ प्र॰)

डॉ॰ मिंतु
असि. प्रो., हिन्दी विभाग
कु॰ मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर (उ॰ प्र॰)

समाज के निर्माण में स्त्री और पुरूष दोनों का महत्वपूर्ण स्थान है। दोनों को एक सिक्के का पहलू माना गया है, किन्तु भारतीय समाज में नारी को सदैव हेय दृष्टि से देखा गया है। समाज का प्रत्येक धर्म अपनी–अपनी परम्पराओं में स्त्री में विश्वास व सम्मान रखता है लेकिन हर धार्मिक परम्परा में स्त्री को ही निरादर दिया गया है। हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री के विविध रूपों का चित्रण किया गया है। कभी उसे देवी माना गया है, कभी उसे तुच्छ वस्तु समझा गया। नारी को अपनी पहचान बनाने के लिए अनेक पड़ावों को पार करना पड़ा। उसने अनेक संघर्षों के उपरान्त समाज में पुरूष वर्ग के समक्ष खड़ा होने का साहस दिखाया। उत्तर आधुनिकता के इस दौर में स्त्री कहीं कोने में पड़ी गठरी मात्र नहीं है, उसमें भी नई चेतना, नया व्यक्तित्व उभर कर आया है। भारतीय नारी को जो तिरस्कार व उपेक्षा का व्यवहार समाज से मिलता आ रहा है उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप नारी मन विद्रोह वैषम्य एवं कुंठा से भर गया और अपना पथ स्वयं बनाने के लिए अपने कदमों को आगे बढ़ा दिया। हिन्दी साहित्यकारों ने नारी के अनेक चित्र प्रस्तुत किए, अमृतलाल नागर, जैनेन्द्र, प्रभा खेतान, मैत्रीयी पुष्पा आदि ने ऐसे रूपों को पाठकों के समक्ष लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री अस्मिता के बदलते स्वरूप को उजागर करने का प्रयास किया गया है।

हिन्दी साहित्य में नारी चित्रण

डॉ॰ बॉबी यादव,